DR. KURELLA VITHALACHARYA

Dr. Kurella Vithalacharya is a well-known poet and writer.

2. Born on 9th July, 1938 at Vellanki, a small village located in Ramannapet Mandal of Yadadri-Bhuvanagiri district Telangana, Dr. Vithalacharya did M.Phil on the topic of "Telugulo Golusukattu Navalalu" which means "Chain Novels in Telugu" from Osmania University, Hyderabad. Later, he was awarded Ph.D by the same university for his exhaustive thesis on the subject of "Telugu Navalallo Swathanthrodyma Chitrana (Up to 1947)", which means "Portrayal of Independence in Telugu Novels (up to 1947)". He has written as many as 30 books and is popularly-known as a poet writer, critic, litterateur, sociologist and reformist and above all humanist.

3. Dr. Vithalacharya established several institutions with an eye to promoting and inspiring the countryside in literary, cultural, educational, spiritual, sociological domains like Akshara Kalabharathi, Bhuvana Bharathi, Mitra Bharathi, Praja Bharathi, Aathmiya Bharathi, Bala Bharathi, Mahila Bharathi etc. are among those institutions which he has established in his life. He started "Akshara Udyamam" (Literacy Movement) teaching the illiterate going from house to house. He took the slogan "Learn signing before dying" to the hearts of the old people and made them learn how to sign/write their name.

4. Dr. Vithalacharya developed all the schools where he worked during his professional career. He received Best Teacher and Best Headmaster awards from the Government. Later, after his retirement, he turned his own house, located in a remote village Vellanki, into a big library. The library named after him as "Acharya Kurella Grandhalayam" was inaugurated with 5000 books. Today, it is being run very- grandly and efficiently in the two-floor building with over two lakh books. So far, many a research scholar both from Telangana and Andhra Pradesh have benefited largely from this library and have received Ph.D degrees too. Even today, a good number of scholars are utilizing the services of this library.

5. Prime Minister Shri Narendra Modi in his 84th episode of "Mann Ki Baat" made appreciatory and congratulatory comments about Sri Kurella Vittalacharya and his selfless services. The Telangana Government has felicitated and honoured him by bestowing upon him the prestigious state-honour "Mahakavi Dasaradhi Puraskaram". Earlier, he was conferred "Telangana Avirbhava Puraskaram" by the Governor. He was also richly honoured by the then Vice-President of India, Sri Venkaiah Naidu with "Vishista Puraskaram", sponsored by Potti Sree Ramulu Telugu University Hyderabad. Satavahana University, Karimnagar, felicitated and honoured him with "Life Achievement Puraskaram".

डॉ. कूरेल्ल विठलाचार्य

डॉ. कूरेल्ल विठलाचार्य एक सुप्रसिद्ध कवि और लेखक हैं।

2. 9 जुलाई, 1938 को रमन्नापेट मंडल के एक छोटे से गांव वेलंकी में जन्मे, डॉ. विठलाचार्य ने तेलंगाना के यदाद्री–भुवनगीरी जिले के ओस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद से "तेलुगुलो गोलुसुकट्टू नवालालु", जिसका अर्थ होता है "तेलुगु में शृंखला उपन्यास" विषय पर एम.फिल किया। बाद में, इसी विश्वविद्यालय ने उन्हें "तेलुगु नवालालु स्वातंत्रोदयमा चित्रणा (1947 तक)" जिसका अर्थ होता है "तेलुगु उपन्यास में स्वतन्त्रता का चित्रण (1947 तक)" विषय पर उनके विस्तृत शोधपत्र के लिए पी.एचडी प्रदान की। उन्होंने 30 पुस्तकों की रचना की है और एक लोकप्रिय कवि लेखक, समालोचक, साहित्यकार, समाजशास्त्री और सुधारक तथा इन सबसे बढ़कर एक मानवतावादी हैं।

3. डॉ. विठलाचार्य ने साहित्य, संस्कृति, शिक्षा, अध्यात्म, समाज अध्ययन में ग्रामीण परिवेश को बढ़ावा देने और प्रेरित करने के लिए कई संस्थानों की स्थापना की है। उनके द्वारा स्थापित संस्थानों में अक्षर कलाभारती, भुवन भारती, मित्र भारती, प्रजा भारती, आत्मीय भारती, बाल भारती, महिला भारती हैं। उन्होंने घर–घर जाकर निरक्षरों में शिक्षा की अलख जगाने के लिए "अक्षरा उद्यम" (साक्षरता आंदोलन) की शुरुआत की। उन्होंने वृद्धों को "देह छूटे इससे पहले हस्ताक्षर करना सीखें" का नारा दिया और उन्हें अपना नाम लिखना सिखाया।

4. डॉ. विठलाचार्य ने उन सभी स्कूलों का संवर्धन किया जहां उन्होंने शिक्षण कार्य किया। सरकार ने उन्हें श्रेष्ठ शिक्षक और श्रेष्ठ प्रधानाध्यापक का पुरस्कार प्रदान किया। बाद में, सेवानिवृत्त होने पर, उन्होंने दूरदराज के गाँव वेलंकी में स्थित अपने घर में एक बड़ा पुस्तकालय बनाया। उनके नाम पर "आचार्य कुरेल्ला ग्रंथालयम" नाम से 5000 पुस्तकों के साथ इस पुस्तकालय का उद्घाटन किया गया था। आज, इस पुस्तकालय में दो लाख से अधिक पुस्तकें हैं और यह एक दोमंजिला इमारत में भव्यता और कुशलता से चलाया जा रहा है। अब तक, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश दोनों राज्यों के कई शोध विद्वान इस पुस्तकालय से अत्यंत लाभान्वित हुए हैं और पीएचडी डिग्री भी प्राप्त की है। आज भी बड़ी संख्या में विद्वान इस पुस्तकालय की सेवाओं का उपयोग कर रहे हैं।

5. प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अपने 84वें "मन की बात" में श्री विठलाचार्य और उनकी निस्वार्थ सेवा को सराहा और बधाई दी। तेलंगाना सरकार ने उन्हें राज्य का प्रतिष्ठित सम्मान "महाकवि दशरथी पुरस्कारम" देकर सम्मानित किया है। इससे पहले, राज्यपाल द्वारा उन्हें "तेलंगाना अविर्भाव पुरस्कारम" से सम्मानित किया गया था। भारत के तत्कालीन उप–राष्ट्रपति श्री वेंकैया नायडू द्वारा उन्हें पोट्टी श्री रामुलु तेलुगु विश्वविद्यालय, हैदराबाद द्वारा प्रायोजित "विशिष्ट पुरस्कारम" के साथ सम्मानित किया था। सातवाहन विश्वविद्यालय, करीमनगर ने उन्हें "लाइफ अचीवमेंट पुरस्कारम" से सम्मानित किया।